* श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते *

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

श्रीमज्जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर पूर्वाचार्य चरणों की कृति का एक संक्षिप्तसन्ध्या और "श्रीसर्वेश्वर पच्चीसी" सहित—

श्रीसर्वेश्वर स्तोत्रमाला

सम्पादक—

अ० पं० श्रीव्रजवल्लभशरण 'निम्बार्कभूषण'

वेदान्ताचार्य पञ्चतीर्थ

प्रकाशक—

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ शिक्षा समिति

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)
किशनगढ़, अजमेर (पुष्करक्षेत्र) राजस्थान

द्वितीयावृत्ति वैशाख शुक्ल अक्षयतृतीया-महोत्सव न्योछावर
१००० वि. सं. २०५४ दि. ९/५/९७ २)

महर्षिवर श्री औदुम्बराचार्य-प्रणीतं

श्रीनिम्बार्क-स्तोत्रम्

श्रीमते सर्वविद्यानां प्रभवाय सुब्रह्मणे ।
आचार्याय मुनीन्द्राय निम्बार्काय नमोनमः ॥१॥

निम्बादित्याय देवाय जगज्जन्मादिकारिणे ।
सुदर्शनावताराय नमस्ते चक्ररूपिणे ॥२॥

नमः कल्याणरूपाय निर्दोषगुणशालिने ।
प्रज्ञानघनरूपाय शुद्धसत्वाय ते नमः ॥३॥

सूर्यकोटिप्रकाशाय कोटीन्दुशीतलाय च ।
शेषानिश्चिततत्त्वाय तत्त्वरूपाय ते नमः ॥४॥

विदिताय विचित्राय नियमानन्दरूपिणे ।
प्रवर्त्तकाय शास्त्राणां नमस्ते शास्त्रयोनये ॥५॥

वसतां नैमिषारण्ये मुनीनां कार्यकारिणे ।
तन्मध्ये मुनिरूपेण वसते प्रभवे नमः ॥६॥

लीलां संपश्यते नित्यं कृष्णस्य परमात्मनः ।
निम्बग्रामनिवासाय विश्वेशाय नमोनमः ॥७॥

स्थापिता येन द्वार्वत्यां तप्तमुद्रा कलौ युगे ।
निम्बार्काय नमस्तस्मै दुष्कृतामन्तकारिणे ॥८॥

य इदं पठते स्तोत्रं निम्बादित्यस्य बुद्धिमान् ।
तस्य क्वापि भयं नास्ति सूर्यस्य तमसीव तु ॥९॥

श्रीआचार्यपरम्परा स्तोत्रम्

श्रीहंसं सनकादिकं मुनिवरं वीणाधरं नारदम्
श्रीमन्निम्बदिवाकरार्यकमहं श्रीश्रीनिवासं भजे ।।

विश्वार्य्यपुरुषोत्तमञ्चभवहन् श्रीमद्विलासास्वरू-
पाचार्य्यं किलमाधवं च वलयुक्भद्रं च पद्मार्पकम् ।।१।।

वन्दे श्यामकगोपपालककृपान्, देवार्यकं सुन्दरम्
पद्मोपेन्द्रक-रामचन्द्रकभटान् श्रीवामनं कृष्णकम् ।।

पद्माभं श्रवणञ्च भूरिभटकं श्रीमाधवं श्यामलम्
गोपालं वलभद्रगोपिवरदं श्रीकेशवं गांगलम् ।।२।।

काश्मीरीयुतकेशवं भटमहं श्रीभट्टदेवं भजे
श्रीव्यासं हरिमध्यगञ्चवरदं श्रीपरशुरामामिधम् ।।

वन्दे श्रीहरिवंशदेवचरणं नारायणार्य्यं भजे
श्रीवृन्दावनदेवपादशरणं गोविन्ददेवं भजे ।।३।।

गोविन्दं प्रणमामि देव शरणं शैलीनवीनांकरम्
लोके ख्याति विधायकं गुरुवरं सर्वेश्वरार्य्यं भजे ।।

श्रीनिम्बार्कपदं सदेवशरणं नित्यं नुमश्चेतसा
वन्दे श्रीव्रजराजपादशरणं देवान्तनामामिधम् ।।४।।

श्रीगोपेश्वरपादपद्मयुगलं नौमि प्रलोभांन्तकम्
पीठं येन विनिर्मितं सुरुचिरं कुण्डं पयोधीकृतम् ।।

राधामाधवपादलोलुपघनश्यामार्यपादं पुनः
देवाचार्यकसंज्ञकं शरणायुक्श्रीबालकृष्णामिधम् ।।५।।

वेदवेदान्ततत्त्वज्ञमिष्टाराधनमानसम् ।
राधासर्वेश्वराद्यं तं शरणान्तं नमाम्यहम् ।।

* आमुख *

एक ही भगवान् अपने अनेक रूपों से सर्वत्र व्याप्त हो रहे हैं, अतः अनन्त और दुष्प्राप्य कहलाते हैं, क्योंकि उनके समस्त रूपों का अर्चन-वन्दन कर उनको रिझाना अशक्य है, इसीलिये विज्ञानियों ने यह निश्चय कर लिया है कि—

"एक हि साधे सब सधैं, सब साधे सब जात"

अर्थात् एक ही श्रीसर्वेश्वर भगवान् के दर्शन-पूजन तथा आत्म समर्पण कर देना कल्याणकारी है। इसी आशय को "श्री-सर्वेश्वर-पञ्चीसी" के रचयिता ने अच्छे ढंग से प्रकट किया है, अतः एकाग्र हो इसका मनन करने से सर्वेश्वर के साक्षात्कार द्वारा साधक को नित्य सुख प्राप्त हो सकता है।

ऐसे कवि की जीवनी पर विचार करने से भी शीघ्र सत्पथ की ओर झुकाव हो सकता है, परन्तु खेद है कि अभी तक श्रीसुख-पुञ्ज कवि का पूर्ण जीवन चरित्र प्राप्त नहीं हो सका है, केवल श्रीनिकुञ्ज वृन्दावन के प्राचीन पुस्तकों में यह एक जीर्णशीर्ण पुस्तक मिल सकी हैं, इसके अन्दर पच्चीसी अष्टक आदि कई एक छोटी-छोटी पुस्तकें हैं। 'श्रीसर्वेश्वर पच्चीसी' के ३, १०, १३, १५, १६, २१, २२, २६ संख्या वाले पदों से सुखपुञ्ज कवि श्रीसर्वेश्वर के पुजारियों में से एक प्रधान अर्चक एवं श्रीनिम्बार्काचार्यपीठा-धिपति श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्यजी महाराज के शिष्य प्रतीत होते हैं, अतः वि० सं० १८०० के लगभग ही इनका समय भी मानना चाहिये। अस्तु! इसको एक उत्तम उपादेय वस्तु समझ कर संध्या और कई एक श्रीसर्वेश्वर के स्तोत्रों के साथ-साथ मुद्रित कर श्री-सर्वेश्वर की प्रेरणा का यह परिणाम उन्हीं के अर्पण किया जारहा है।

—अ० व्रजवल्लभशरण वेदान्ताचार्य पञ्चतीर्थ

उपासना परक स्तवों की उपादेयता

अनादि वैदिक वैष्णव चतुःसम्प्रदाय में श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय की सर्वप्राचीनता परम प्रसिद्ध है। नित्यनिकुञ्जविहारी श्यामा-श्याम की माधुर्यमयी युगलोपासना इस सम्प्रदाय का परमपुरुषार्थ है। ललित पदावली में विविध स्तोत्रों की रचना द्वारा अपने आराध्य की रसमयी उपासना करना आचार्यों की परम्परा रही है। पूर्वाचार्यों द्वारा विरचित संस्कृत स्तोंत्रों का संग्रह स्वरूप "श्रीसर्वेश्वर स्तोत्र माला" का यह द्वितीय संस्करण वर्तमान पीठाधीश्वर श्री "श्रीजी" महाराज की आज्ञा से प्रकाशित होरहा है। श्रीश्रीभट्टदेवाचार्यजी महाराज के अनन्तर संस्कृत तथा लोक भाषा (वाणी) में विपुल साहित्य की रचनाएँ हुई हैं। वर्तमान आचार्यश्री ने देववाणी व लोकवाणी में व्याख्यानात्मक तथा मौलिक रचनाओं से सारस्वत कोष की विशेष अभिवृद्धि की है।

अभिनव रचना प्रकाशन के साथ प्राचीन दुर्लभ कृतियों का भी प्रभूत रूप में प्रकाशन आचार्यपीठ की ओर से हो रहा है। प्रस्तुत "स्तोत्र माला" में पूर्वाचार्यों द्वारा रचित संस्कृत की सरस व सरल रचनाओं का संकलन है जो भावुक रसिकों के लिए सहज बोध गम्य है।

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के आचार्यप्रवर ही नहीं, अधिकारी-वृन्द एवं अर्चकगण भी उद्भट विद्वान् तथा कवि हुए हैं। अर्चकों

में श्रीसुखपुञ्जजी एवं अधिकारीवृन्दों में पं० श्रीलाडिलीशरणजी, श्रीव्रजवल्लभशरणजी के नाम सादर उल्लेखनीय हैं। अधिकारी श्रीव्रजवल्लभशरणजी द्वारा रचित "आचार्य परम्परा स्तोत्र" का भी इसमें समावेश है जिसमें श्रीहँस भगवान् से लेकर वर्तमान आचार्यश्री पर्यन्त की नामावली संगृहीत है। प्रथमवार प्रस्तुत "स्तोत्रमाला" का संग्रह एवं प्रकाशन इन्हीं अधिकारीजी के द्वारा हुआ था। इस संस्करण में वर्तमान आचार्यश्री की अभिनव रचना "श्रीकृष्णाष्टकम्" अत्यन्त प्राञ्जल व सरल है। इन स्तोत्रों के नित्य पाठ करने से भगवान् श्रीराधामाधव प्रभु अवश्य प्रसन्न होते हैं, जिससे साधकों को उनकी सहज कृपैकलभ्य भक्ति प्राप्त हो सकती है। अत: समस्त वैष्णवजनों को इन स्तोत्रों का सतत पठन-मनन अतीव श्रेयस्कर होगा ऐसा दृढ़ विश्वास है।

विनीत—

वासुदेवशरण उपाध्याय 'निम्बार्कभूषण'
व्या० सा० वेदान्ताचार्य
प्राचार्य—
श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय
निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद
अजमेर (राजस्थान)

※ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ※

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

अथ—

श्रीसर्वेश्वर संक्षिप्त संध्या प्रारम्भ*

प्रातःकाल ब्राह्म मुहूर्त में सजग होकर सर्व प्रथम सर्वान्तर्यामी भगवान् की—

योऽन्तर्गतो निखिलजिवधियां नियन्ता,
सम्बोधयत्यखिलवेदशिरोभिगीतः ।
सुप्तानि विश्वकरणानि च विश्वहेतु—
स्तस्मैनमो भगवते करुणार्णवाय ।।१।।

इस मन्त्र से वन्दना कर, आज के दिन में होने वाले समस्त कर्मों को नीचे लिखे श्लोक को पढ़, भगवान् के अर्पण कर देने की प्रतिज्ञा करें ।

कामतोऽकामतोवापि, यत्करोमि शुभाशुभम् ।
तत्सर्वं त्वयि विन्यस्तं, त्वत्प्रयुक्तः करोम्यहम् ।।२।।

फिर श्रीनिम्बार्क भगवान् कृत प्रातः--स्तोत्र से, अथवा उसके आदि के प्रथम श्लोक से ही भगवान् का स्मरण करे—

प्रातःस्मरामि युगकेलिरसाभिषिक्तं वृन्दावने सुरमणीयमुदारवृक्षम् ।
सौरीप्रवाहवृतमात्मगुणप्रकाशं युग्मांघ्रिरेणुकणिकाञ्चितसर्वसत्वम्

---

* जिनको वैदिक तान्त्रिक विस्तृत संध्या करने का समय हो, वे पं० श्रीलाड़िलीशरणजी द्वारा संग्रहीत नित्यकर्म पद्धति देखें ।

फिर—

आनन्दमानन्दकरप्रसन्नं, ज्ञानस्वरूपं निजभावयुक्तम् ।
योगीन्द्रमाद्यं भवरोगवैद्यं, श्रीमद्गुरुं नित्यमहं स्मरामि ।।४।।

यह श्लोक पढ़कर गुरुदेव को प्रणाम करे पश्चात्—

समुद्रमेखलेदेवि ! पर्वतस्तन मण्डले ।
विष्णुपत्नि ! नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ।।

इस श्लोक से पृथ्वी की प्रार्थना कर विस्तर से उठ, अपनी अनुकूलता के अनुसार (शौच—निवृत्ति, हाथ मुँह धोना) आदि कर दान्तुन करे । फिर किसी सरिता, सरोवर, बावड़ी, कुआँ आदि जलाशय पर अथवा अपने गृह में ही स्नान करे । स्नान करने के पहिले तिथिवार आदि का उच्चारण कर—

"अद्य—श्रीगोपालोपासनादिनित्यकर्मांगतया प्रातः स्नानमहं करिष्ये ।"

इन संस्कृत पदों से संकल्प कर तर्जनी (अँगूठे के पास वाली) अँगुली जल में डालकर—

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।।

इस श्लोक से अँगुली को चारों ओर घुमाकर उस जल में समस्त तीर्थों की भावना करे फिर मूल (श्रीगुरुदेव का दिया हुआ) मन्त्र से उस जल को अभिमन्त्रित कर दोनों हाथों की कलश मुद्रा बनाकर, मूल मन्त्र बोलता हुआ एकादश वार मस्तक पर जल छोड़े, फिर समस्त शरीर का स्नान कर वस्त्र पहिन,

*संध्या करने के लिये शुद्ध पृथ्वी पर आसन बिछाकर—"ॐ आधार शक्ति कमलासनायनमः" इस मन्त्र को पढ़, धेनु मुद्रा दिखा आसन के ऊपर बैठे।

पृथ्वीत्वयाधृता लोका देवि त्वं विष्णुनाधृता।
त्वं च धारय मां देवी पवित्रं कुरुचासनम् ॐनमः॥

इस मन्त्र से पृथ्वो की प्रार्थना करे फिर आसन पर बैठकर वाम हस्त में गोपीचन्दन घिस कर नीचे लिखे मन्त्रों से द्वादश तिलक करे। घिसे हुए चन्दन को पहिले दाहिने हाथ से ढांककर १० वार मूलमन्त्र से अभिमन्त्रित कर लेना चाहिये और लिख सके तो उस चन्दन घिसी हुई हथेली पर षट्कोण चक्र और उसके बीच में काम बीज भी लिखे।०

---

* यदि किसी तीर्थ या नदी, सरोवर आदि पर स्नान किया जाय तो स्नान करने के अनन्तर वहाँ ही उसी जल के तिलक और आचमन कर मूल (गुरु प्रदत्त) मन्त्र का उच्चारण कर "ॐ श्रीसर्वेश्वरं कृष्णं तर्पयामि" यह बोलकर ३ अँजलिया भगवान् के अर्पण करे, फिर वस्त्र पहिने।

० 'नासिका--मूलमारभ्य' इस प्रमाण से नासिका के चौथे हिस्सा को छोड़कर उस पर बीच की तीनों अँगुलियों में से किसी एक अंगुली से केश पर्यन्त ललाट में एक पंक्ति खेंच उसके बीच के चन्दन को वस्त्र से पोंछकर आजू-बाजू दो खड़ी रेखा बना उनके अन्दर भुंवारों के बीच में एक श्याम बिन्दु धारण करे, वह कज्जलगिरि या राधाकुण्ड की मृत्तिका से, अथवा श्रीसर्वेश्वरजी के अर्पण किये हुये धूप की भस्म से करनी चाहिये। यह तिलक भगवान् का मन्दिर माना जाता है और उसमें की श्यामबिन्दु श्रीराधासर्वेश्वर का स्वरूप है।

उर्ध्व पुण्ड्र (तिलक) करने का क्रम–

द्वादश तिलकों के मन्त्र—१ 'ॐ केशवाय नमः' इससे ललाट में। २ 'ॐ नारायणाय नमः' इससे पेट पर। ३ 'ॐ माधवाय-नमः' इससे हृदय पर। ४ 'ॐ गोविन्दाय नमः' इससे कण्ठ में। ५ 'ॐ विष्णवे नमः' इससे दाहिनी कोख में। ६ 'ॐ मधुसूदनाय नमः' इससे दाहिनी भुजा पर। ७ 'ॐ त्रिविक्रमाय नमः' इससे दाहिने कन्धे में। ८ 'ॐ वामनाय नमः' इससे बाँई कोख में। ९ 'ॐ श्रीधराय नमः' इससे बाँई भुजा पर। १० 'ॐ हृषीकेशाय नमः' इससे बाँये कन्धे पर। ११ 'ॐ पद्मनाभाय नमः' इससे पीठ पर। १२ 'ॐ दामोदराय नमः' इससे कमर में। शेष जो हथेली के लगा हुआ हो उस चन्दन को जल से भिगोकर 'ॐ वासुदेवाय-नमः' यह मन्त्र पढ़कर चोटी के ऊपर पोंछ दे। ऐसे द्वादश तिलक कर—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं सवाह्याऽऽभ्यन्तरः शुचिः॥

इस मन्त्र से बाँये हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ की अँगुलियों से मस्तक आदि समस्त अङ्गां में प्रोक्षण करे। फिर दाहिने हाथ में जल लेकर "ॐ अद्य श्रीगोपालोपासनांगतया प्रातः सन्ध्यो पासन कर्म करिष्ये" यह संकल्प बोलकर उसको पृथ्वी पर छोड़ दे। फिर दाहिने हाथ में जल लेकर बाँये हाथ से ढाँक "ॐ श्रीकृष्णायनमः" इस मन्त्र से तीन वार अभिमन्त्रित कर तीन आचमन करे। फिर उसी दाहिने हाथ में जल लेकर बांये हाथ से आच्छादन कर मूलमन्त्र से एक बार अभिमन्त्रित कर उस जल को बाँये हाथ में लेना और उस हाथ की अँगुलियों में से झरने वाला जल मस्तक पर डाले। फिर अघमर्षण करे।

अथ अघमर्षणविधि—दाहिने हाथ में जल लेकर बाँये हाथ से ढांककर, एक वार मूलमन्त्र से अभिमन्त्रित कर दाहिने नाक के सुराख के लगाना, फिर मन में यह भावना करनी कि मेरे अन्दर जो कुछ भी पाप था वह सम्पूर्ण इस जल में आ गया, तब 'अस्त्राय फट्' यह मन्त्र बोलकर बाँये भाग में छोड़ दे। और चित्त में यह कल्पना करे कि बज्र शिला डालकर मैंने अपने पाप की हँडिया फोड़ दी। इसके बाद न्यास करे—

अथ न्यास विधि—'ॐ दामोदराय नमः' इससे मस्तक को, और 'ॐ संकर्षणाय नमः' इससे मुख को, 'ॐ वासुदेवाय नमः' 'ॐ प्रद्युम्नाय नमः' इन दोनों मन्त्रों से दोनों नासिकाओं को 'ॐ अनिरुद्धाय नमः' और 'ॐ पुरुषोत्तमाय नमः' इन दोनों मन्त्रों से दोनों नेत्रों को, फिर 'ॐ अधोक्षजाय नमः' 'ॐ नृसिंहाय नमः' इन दोनों मन्त्रों से दोनों कानों को, फिर 'ॐ अच्युताय नमः' इससे नाभि को, फिर 'ॐ जनार्दनाय नमः' इस मन्त्र से हृदय को और 'ॐ उपेन्द्राय नमः' इससे मस्तक को और 'ॐ हरये नमः' तथा 'ॐ विष्णवे नमः इन दोनों मन्त्रों से दोनों भुजाओं को प्रोक्षण अर्थात् जल के छीटे दे। फिर मूलमन्त्र से शिखा बाँधे और मूलमन्त्र बोलकर आचमन कर प्राणायाम करे।

प्राणायाम विधि—'क्लीं' इस काम बीज से पूरक करे अर्थात् दाहिने हाथ के अंगूठे से नासिका के दाहिने स्वर को बन्द कर बाँये स्वर से तब तक श्वास धीरे-धीरे चढ़ावे जब तक कि 'क्लीं' यह बीजमन्त्र सोलह बार बोला जाय। फिर दाहिने हाथ की तीनों अंगुलियों से बाँये स्वर को भी बन्द करदे और उसी बीज मन्त्र को ६४ बार जपे, इस प्रकार 'कुम्भक (प्राणायाम) कर, रेचक (प्राणायाम) करे, अर्थात् दाहिने स्वर पर से अंगूठे

को हटाकर उससे धीरे-धीरे श्वाँस छोड़े और ३२ बार 'क्लीं' का उच्चारण करे।

अथ भूत शुद्धि 'अद्य श्रीमत्सर्वेश्वरकृष्णाराधनयोग्यता सिद्धयर्थं भूतशुद्धिमहंकरिष्ये।' इस वाक्य धारा से भूत शुद्धि का संकल्प कर कच्छप मुद्रा से हृदय में स्थित दीपक कर्णिका के आकार वाली जीव रूपी ज्योति को परं तेज में, अर्थात् ब्रह्माण्डस्थ सहस्र दल कमल में स्थित परमात्मा में लगाकर, पृथ्वी आदि २५ तत्त्वों को उसी में लीन मानकर 'यं' इस वायु बीज को १६ बार जपे और नासिका के बाँये स्वर से श्वाँस चढ़ावे, फिर उसी 'यं' का ६४ बार उच्चारण कर कुम्भक करे अर्थात् नासिका के दोनों स्वरों को बन्द कर श्वाँस रोके और वायु बीज 'यं' का ६४ बार जप करे, उस समय ऐसी मानसिक भावना करनी चाहिये कि अब मेरा यह प्राकृत शरीर वायु के द्वारा शोषण किया गया, फिर उसी वायु बीज 'यं' को ३२ बार उच्चारण कर रेचक अर्थात् धीरे-धीरे श्वाँस को उतारे।

फिर दूषित देह को नाश करने वाले रक्तवर्ण अग्नि बीज 'रं' इस मन्त्र को १६ बार उच्चारण कर नासिका के दहिने स्वर से श्वास को चढ़ावे, फिर दोनों स्वरों को बन्द कर उसी 'रं' बीज का ६४ बार उच्चारण करता हुआ कुम्भक करे और दूषित देह के नष्ट हो जाने की भावना करे। तदनन्तर बांये स्वर को खोलकर रेचक करे अर्थात् 'यं' बीज को १६ बार जपते-जपते श्वास को उतार दे।

फिर श्वेत वर्ण वाले चन्द्र बीज 'ढं' इस मन्त्र को १६ बार जपता हुआ दहिने नासिका को बन्द कर बांये स्वर से धीरे-धीरे श्वास चढ़ावे और उस बीज के ललाटदेशीय चन्द्रमा में लीन होने

की भावना करे। फिर शुक्लवर्ण वाले वरुण वीज 'वं' को ६४ वार जपता हुआ कुम्भक करे, उस समय अमृतमय वृष्टि की भावना कर यह कल्पना करे कि अब यह शरीर भगवान् की सेवा के योग्य संशुद्ध हो गया। पश्चात् पीले वर्ण वाले पृथ्वी वीज 'लं' इस मन्त्र को ३२ बार उच्चारण करता हुआ दाहिने स्वर को खोलकर धीरे-धीरे श्वास को उतारे।

अथ सूर्य्यार्घ्य प्रदान विधि—ताँबे आदि के स्वच्छ अर्घ्य पात्र को चन्दन पुष्पादि युक्त जल से पूरित कर मूल मन्त्र का उच्चारण करे फिर 'सूर्यमण्डलस्थाय श्रीकृष्णाय इदमर्घ्यं समर्पयामि' यह बोल भुजा फैलाकर तीन अञ्जलि सूर्यदेव को अर्पण करे। उसके पीछे दोनों हाथों की अञ्जलि बांधकर—

'ॐ गोपालाय विद्महे गोपीवल्लभाय धीमही तन्नः कृष्ण प्रचोदयात्'।

इस श्रीगोपाल गायत्री से भगवत्प्रार्थना कर करन्यास अङ्गन्यास करे, 'करन्यास विधि' 'ॐ गोपालाय अंगुष्ठाभ्यां नमः' यह बोलकर दोनों हाथों के अंगूठों को तर्जनी अंगुलियों से स्पर्श करे। 'विद्महे तर्जनीभ्यां नमः' यह बोलकर दोनों हाथों के अंगूठों से दोनों तर्जनी अंगुलियों को स्पर्श करे। 'गोपीवल्लभाय मध्यमाभ्यां नमः' इसको उच्चारण कर अंगूठों से दोनों मध्यमा अंगुलियों के अग्र भागों को स्पर्श करे। 'धीमहि अनामिकाभ्यां नमः' यह बोलकर दोनों अनामिकाओं का स्पर्श करे और 'तन्नः कृष्ण कनिष्ठिकाभ्यां नमः' इसको पढ़कर कनिष्ठिकाओं को स्पर्श करे। 'प्रचोदयात् करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः' इसको पढ़कर हाथों को उलटकर फिर पलटै।

हृदयादिन्यास—'ॐ गोपालायहृदयाय नमः' इसको पढ़कर हृदय को दहिने हाथ से स्पर्श करे 'विद्महे शिरसे स्वाहा' इससे

मस्तक को स्पर्श करे और 'गोपीवल्लभाय शिखायैवषट्' इससे शिखा को स्पर्श करे। 'धीमही कवचायहुँ' कन्धों को 'तन्न कृष्ण-नेत्रत्रयाय वौषट्' नेत्रों को 'प्रचोदयात् अस्त्राय फट्' इससे बाँये हाथ के चौतरफा दाहिने हाथ को घुमाकर ताली बजावें।

इस प्रकार न्यास कर फिर सूर्य के अन्दर अन्तर्यामी रूप से विराजमान नारायण का ध्यान करें—

ध्येय: सदा सवितृ मंडलमध्यवर्ती नारायण: सरसिजासनसन्निविष्ट:।
केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटहारी हिरण्मयवपुर्धृतशंखचक्र:।१

ऐसे श्रीसर्वेश्वर नारायण का ध्यान कर गायत्री का आवाहन करे—

आगच्छ वरदे देवि ! त्रिपदि कृष्ण वादिनि।
गायत्री छन्दसां मातः कृष्णयोनि नमोऽस्तुते॥

इस मन्त्र से गायत्री का आवाहन कर पूर्वोक्त श्रीगोपाल गायत्री का अपने अवकाशानुसार १०८ अथवा कम से कम २८ बार जप करे।

उत्तमे शिखरे देवि ! भूम्यां पर्बतमूर्धनि।
ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता गच्छ देवियथासुखम्॥

इस श्लोक को पढ़कर गायत्री का विसर्जन करे।*

---

* गायत्री का आवाहन कर—

सुमुखं सम्पुटं चैव विततं विस्तृतं तथा
द्विमुखं त्रिमुखं चाथ चतुष्पंच मुखं तथा॥१॥
षण्मुखाऽधोमुखं चैव व्यापिकाञ्जलिकं तथा
शकटं यमपाशं च ग्रंथितं चोन्मुखोन्मुखम्॥२॥
प्रलम्बं मुष्टिकं चैब मत्स्यकूर्मवराहकम्
सिंहाक्रान्तं महाक्रान्तं मुद्गरं पल्लवं तथा॥३॥

यह २४ मुद्रायें हाथों से बना बनाकर दिखावे पश्चात् जप करे, और जप के अनन्तर—

अथ मन्त्र जाप विधि–

गायत्री के जप को समाप्त कर मन्त्र जप के लिये नीचे लिखा हुआ विनियोग पढ़े ।

विनियोग –'ॐ' अस्य श्रीगोपालाष्टादशाक्षरमंत्रस्य श्री नारदऋषिरनुष्टुप छन्दः । श्रीकृष्णः परमात्मा देवता क्लींबीजं, स्वाहा शक्तिः, ह्लों कीलकं, श्रीकृष्णप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

फिर ऋष्यादिन्यास करे अर्थात् नीचे लिखे मन्त्रों को बोल-बोलकर उन अङ्गों को दाहिने हाथ की तीन अंगुलियों से स्पर्श करे ।

ऋष्यादि न्यास—'ॐ नारदऋषये नमः' (शिरसि) इससे मस्तक को, 'गायत्री छन्दसे नमः' (मुखे) इससे मुख को । 'श्री कृष्ण देवतायै नमः' (हृदये) इससे हृदय को । 'क्लींबीजाय नमः (गुह्ये)' इससे गुप्त स्थल को । 'स्वाहा शक्त्यै नमः (पादयोः)' इससे दोनों पैरों को । 'ह्लीं कीलकाय नमः (सर्वांगे)' इससे सम्पूर्ण अङ्ग को दाहिने हाथ की अंगुलियों से स्पर्श करे ।

फिर नीचे लिखे मन्त्रों का उच्चारण कर करन्यास और हृदयादिन्यास करे ।

करन्यास—'क्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः' इससे दोनों अंगूठों को, 'कृष्णाय नमः तर्जुनीभ्यां नमः' इससे दोनों तर्जुनी अंगुलियों को । 'गोविन्दाय मध्यमाभ्यां नमः' इससे दोनों मध्यमा । 'गोपीजन अनामिकाभ्यां नमः' इससे अनामिका और 'वल्लभाय-कनिष्ठिकाभ्यां नमः' इससे कनिष्ठिका और 'स्वाहा करतल कर-पृष्ठाभ्यां नमः' इससे दोनों हथेलियों को उलट-पुलट करे ।

सुरभीं ज्ञानवैराग्यं योनिः शङ्खोऽथ पंकजम् ।
लिंगं निर्वाणकं चैवह्यष्टौ मुद्रा प्रकीर्तिता ।।४।।

यह आठ मुद्रा दिखाकर फिर विसर्जन करे ।

अङ्ग न्यास—क्लीं हृदयाय नमः' हृदय को। 'कृष्णाय शिरसे स्वाहा' मस्तक को। 'गोविन्दाय शिखायै वषट्' चोटी को 'गोपीजनकवचाय हुँ' दोनों कन्धों को 'वल्लभाय नेत्रत्रयाय वौषट्' दोनों नेत्रों को। 'स्वाहा अस्त्राय फट्' बांये हाथ के चारों ओर दहिने हाथ से ताली बजाना।

पद न्यास—'क्लीं नमो मूर्ध्नि' मस्तक को। 'कृष्णाय नमो वक्त्रे' मुख को। गोविन्दाय नमोहृदि' हृदय को। 'गोपीजन वल्लभाय नमः' नाभौ नाभी को। स्वाहानमः पादयो' पैरों को।

अक्षर न्यास—उपरोक्त रीति से ही मन्त्रराज के अक्षरों का न्यास करे अर्थात् 'क्लीं' से मस्तक को। 'कृ' से ललाट को, 'ष्णां' से भुवारों को। 'यं' से नेत्रों को। 'गों' से कानों को। 'विं' से नासिका को। 'दां' से मुख को। 'यं' से कंठ को। 'गों' से कंधों को। 'पीं' से हृदय को। 'जं' से उदर को। 'नं' से नाभि को। 'वं' से लिंग को। 'ल्लं' से गुप्त स्थल को। 'भां' से कमर को। 'यं' से जाँघों को। 'स्वां' से घुटनों को। 'हां' से पैरों को।

उपरोक्त क्रम से ऋषि आदिक पाँचों न्यास कर मौन होकर भगवान् का ध्यान करता रहे और तुलसी की माला से यथा शक्ति जप करे जप के अन्त में—

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादात्त्वयि स्थितिः॥

इस मन्त्र को उच्चारण कर अपने किये हुए समस्त कर्मों को श्रीसर्वेश्वर भगवान् के अर्पण करे।

ॐ तत्सत् श्रीसर्वेश्वरार्पणमस्तु !

॥ इति श्रीसर्वेश्वर-संक्षिप्तसंध्याविधिः ॥

अथ–

श्रीमत्सुखपुञ्ज कविवर–विरचित

श्रीसर्वेश्वर पच्चीसी

रिक्ता न यस्मादणवस्तथापि निम्बार्कपीठे वपुषा स्थितो यः ।
तस्यैव सर्वेश्वरशब्दनाला संचीयते स्तोत्रसरोजमाला ।।१।।

कवित्त—

रघुकुल रामचन्द्र रामानुज सम्प्रदा में,
जानकी सहित उन उर मांही धारे हैं ।
गोड़ियांन के स्वरूप गोविन्द देव, गोपीनाथ,
जिनके हिये में उन हू के ध्यान भारे हैं ।।
गोकुलस्थ गोवर्द्धन नाथ के उपासक हैं,
चारों घर मांहि श्रीराम कृष्ण ही उचारे हैं ।
निम्बार्क सम्प्रदाय में कहैं सुख पुञ्ज ये,
सदैव सरवेश्वर जु ठाकुर हमारे हैं ।।१।।

सवैया—

यो हि स्वयम्भू सदैव सनातन, सच्चिदानन्द है नाम जिहीं को ।
यो नन्द नन्दन है परतच्छि, गह्यो जसुधा ढिग मांट मही को ।।
जेते धरे अवतार सु यांहि, निवाह कियो दृढ़ वांह गही को ।
जासों कहैं सब जोतिर ब्रह्म, स्वरूप सुतो सरवेश्वर ही को ।।२।।

कवित्त—

निज परि कर में सदैव रहि देखैं हम,
सुनत निकुञ्जन में नूपुर के झुनकें।
जहां हम रहैं तहां कोउ हू न जान पावै,
दम्पति विहार जहां कढ़ै चोज गुन के।।
करत खवासी सुख पुञ्ज हैं निकट,
जहां लगे ही रहत मन महानुभावुन के।
हम जानैं ऐसें कोउ कैसें हू भले हि जानौं,
ठाकुर सरवेश्वर हमारे हम किंकर हैं उनके।।३

जैसे कोउ साधै सरदार आपने को मन,
तैसें हम कबहूं न राखत उदासी में।
महल टहल निजु रहत हमारे हाथ,
गुप्त कथा है सो कहूं न परकासी मैं।
ललिता विशाखादि अष्ट सखिन समूह,
तहां सुख पुञ्ज रहैं सुघरस भासी मैं।
महानुभाव होंय सो पिछानैं अरु जानैं कहा,
हम सरवेश्वर की रहत खवासी में।।४।।

मालिक अखिल ब्रह्माण्ड को यही है याकी,
दृढ़ता विचारि चर नार विन्द गहुरे।
भूलै मति याकी गति अगम अपार तू-,
सदैव सुख पुञ्ज कहैं याकों होय रहुरे।।
यही ब्रह्म यही जोति यही तत्व ईश्वर यह,
यासों मिलि काम-क्रोध-लोभ-मोह दहुरे।
एरे मन मेरे तेरे चाहत सुधार तो तू,
सरवेश्वर सरवेश्वर सरवेश्वर कहुरे।।५।।

वेदनि में मंत्रनि में तीरथ पुराननि में,
जहाँ-तहाँ रूप देखि रोम-रोम हरैं।
यज्ञन में योगन में सन्त विप्र गऊ वन में,
अपने हू मन में मानों वही जोति सरसें।।
गुनिन में गायवे में कविता में सुख पुञ्ज,
मेरे जानि मेहनि में वही आप बरसें।
गामन में धामन में नामन में हमें एक,
सरवेश्वर सरवेश्वर सरवेश्वर दरसें।।६।।

नेम सरवेश्वर को प्रेम सरवेश्वर को,
घट-घट व्यापि के रच्यो है सृष्टि जनको।
तन सरवेश्वर को मन सरवेश्वर को,
गुन सरवेश्वर को छाय रह्यो छव को।।
हम सरवेश्वर के तुम सरवेश्वर के,
सरवेश्वर देत हैं सुधारि काँम ढव को।।
इष्ट सरवेश्वर सुदिष्ट सरवेश्वर,
है सृष्टि सरवेश्वर की सरवेश्वर सबको।।७।।

सवैया—

मालिक हैं सरवेश्वर ही, सरवेश्वर तें सब लागत नीके।
सम्पति है सरवेश्वर ही मम-रक्षक हैं सरवेश्वर 'जी' के।।
सरवस हैं सरवेश्वर ही, सुख पुञ्ज वशी कर हैं न किसी किसी के।
ठाकुर हैं सरवेश्वर ही, हम चाकर हैं सरवेश्वर ही के।।८।।
आदि अनादि स्वयम्भू स्वरूप, करी मन वांछित कामना धूकी।
गारि दुशासन को सब गर्व, सम्हारि लई सुधि द्रोपदि हू की।।
है दृढ़ता सुख पुञ्ज हमें, अब राखत लाज वलाय हितू की।
और की चाह रहै न रहै, परवाह रहै सरवेश्वर जू की।।९।।

नाम जपैं सरवेश्वर को, सरवेश्वर प्यारो लगै मम जी सों।
वारिश है सरवेश्वर ही, सरवेश्वर राखत चित्त खुशी सों।।
दीखैं हमें सरवेश्वर सर्वस, काम हमें सरवेश्वर ही सों।
इष्ट हमारो, उपासक हैं, सरवेश्वर के सरवेश्वर की सों।।१०।।

कैयो हू बेर भयो विगद्यो, जिनके गुनको जन जानें ततछन।
मेरो सदैव कहैं सुख पुञ्ज, कहूं न लगै इनहीं में रहै मन।।
चाहैं सु येहि करें छिन में, यहाँ मानुष को न चलै कछु पर्पन।
हैया स्वरूप को योंहि प्रभाव, जहांहि रहै तहाँ लाखन को धन।।११।।

सब तीरथ व्रत तपस्यारू सेवन, जोफल होत प्रयोगनि कीयैं।
जीव दया उपकार कई सम, होत जो दान अनेकन दीयैं।
यो सुख पुञ्ज सुकर्म कई को, सवाद ज्यों आवत अमृत पीयैं।
होत है साधन सिद्धि सबै, सर्वेश्वर को चरनोदक लीयैं।।१२।।

सन्तन के मनमें निजु धाम में आवत होय रहैं फिरि नांहीं।
हों मन थाम्भत हों निशिवासर, सेवा करूं हितकें चित चाहीं।।
और सुभाव पिछानें कहा, उन यासों गही सुख पुञ्ज की वांहीं।
उज्ज्वल देखि सदैव वसैं, सरवेश्वर मोमन मन्दिर मांही।।१३।।

सब तीरथ व्रत करें कितनेहु, कितै मग धामनि ही के नपैं।
कितने सुख पुञ्ज जिमावत विप्र, किते बन सिद्ध प्रसिद्ध तपैं।।
कितनेक तो यज्ञ करैं हठ योगनि, काशी करोतिन तेंन कपैं।
हम श्री सर्वेश्वर श्री सर्वेश्वर, श्री सर्वेश्वर नाम जपैं।।१४।।

कवित्त—

विधि जानैं मेरो ही महेश जानैं मेरो यह,
जाको जग जानैं करै सफल जमारो ही।
इन्द्र जानैं मेरो ही कुवेर जानैं मेरो यही,
शेष जानैं मेरो मोकूं याही को सहारो ही।।

नन्द जानैं मेरो यशुदा हू जानैं मेरो लाल,
देखि रूप अद्भुत आवत तंमारो ही ।
सन्त जानैं मेरो ही महन्त जानैं मेरो ही,
सुख पुञ्ज सब ही को हम जानत हमारो ही ।।१५

सेये इन्हें विधि सों विरंचि शिव नारदादि,
कैयो मुनीं मानवी न पाये थाह मेंन के ।
सेये इन्हें किन्नर कुवेर शेष उद्धव लों
प्रेमी महानुभावन सुसन्त वृन्दावन के ।।
सेये इन्हें श्रीनिम्बार्क सम्प्रदायाचार्य,
तिन्हें देखि हर्षत रोम रोम तन के ।
सो ही सर्वेश्वर सदैव हम सेवैं,
सुख पुञ्ज कहैं ये स्वरूप सनकादिकन के ।।१६।।

उहां यह स्वरूप राखि लक्ष्मी लों निकट भये,
प्रगट स्वयम्भू शेषशायी होय लोटे से ।
अखिल धरा को भार छिन में उतारि डारै,
मारि असुर सुभाव जानि खोटे से ।।
गोपी गोप गायन में गोकुल में सुखपुञ्ज,
केलि समै हमें जानि परैं नन्द ढोटे से ।
छल सों दिखाय कें सुदर्शन स्वरूप धारि,
अब बनि बैठे सरवेश्वरजू छोटे से ।।१७।।

कच्छ मच्छ यही है बाराह श्रीनृसिंह रूप,
बलि छलवे को भयो वामन अरूप यो ।
करि के निछत्री भूमि यही भो परशुराम,
राम कृष्ण बुद्धावतार भयो भूप यो ।।

यही भयो कल्की स्वरूप रूप कै योहू धारि,
जन कों उवारि करै पार अन्ध कूप यो ।
कहैं सुख पुञ्ज सरवेश्वर के छलबल,
अब वनि बैठ्यो है सुदर्शन स्वरूप यो ।।१८।।

सवैया—

राख्यो करैं इनको मन हाथ कह्यो सु करैं इनकों जु सुहाई ।
नाम जपैं इनके गुन को मन के मनिकान की माल गुहाई ।।
यों सुख पुञ्ज लगायो करैं चुटकी इमि आवत ज्यों जमुहाई ।
भूलैं कहूं सरवेश्वर को तो हमें श्रीसरवेश्वर ही की दुहाई ।।१९।।
जप्यो इस नाम को शेष महेश गनेश सुरेश विचारि यदैव ।
जप्यो सनकादिक नारद शारद सन्त-महन्त तज्यो न कदैव ।।
सुमेर हू काम दुघा कल्पद्रुम इन्द्रकुवेर लों जाको विभैव ।
करो मन के मतिकान की माला जपों सरवेश्वर नाम सदैव ।।२०।।

कवित्त—

जन्म लियो है ताहि दिन सों उपासना या हमारे,
लिखी है जन्मपत्रिन के टेवा में ।
सेवा को अनुक्रम यथारथ हमहीं याद राखें,
भक्ति दृढ़ करि हमारे इष्ट देवा में ।।
हमते प्रसन्न है सदैव इन बातन तैं,
हमें ही समुझि इन बातन के भेवा में ।
सब देखों तब सुख पुञ्ज कहैं मेरो मन,
लग्यो ही रहत सरवेश्वर की सेवा में ।।२१।।
अन्तरंग बातन की खबर हमें ही सदा,
सेवन करत रहैं निकट दुहूं के साथ ।

सूक्ष्म स्वरूप बनि बैठत सुदर्शन यो,
हम देख्यो व्रज में व्रजांगनांनि मोरे नाथ ।
निपट नजीक रहै बिना कौन पावै पार,
कैयो बात यामें यो प्रतछि त्रिभुवन नाथ ।
सैंन समै राधा सरवेश्वर के सुख पुञ्ज,
चरनपलोट वे की टहल हमारे साथ ।।२२।।

जीव कहै मनसों नजीकी जानि नीकी बात,
कहे मैं रहोंगो नहिं अनत वहै गोतो ।
तेरो मेरो याहि मैं सुधार है विचारि लेहु,
कहै सुख पुञ्ज जो तू दृढ़ता गहैगोतो ।।
तेरो आव आदर दुहूं ठां जब ह्वैहै तब,
काम क्रोध लोभ मोह पातक दहैगो तो ।
एरे मन मेरे सरवेश्वर सों लग्यो है तो,
तब तोहिं जानि हों जो लग्यो ही रहैगो तो ।।२३

सवैया—

तू लगो ही भयो अब चाहत है तो उपासना को दृढि के गहुरे ।
रसना सों रटचो करि नाम यही बकवाद वृथा न कभी कहुरे ।।
इन बातनि होत सुधार सदैव सुभक्ति पदारथ को लहुरे ।
सुख पुंज कहैं सरवेश्वर मैं मन मेरे लग्यो तो लग्यो रहुरे ।।२४।।

जानैं सुजानैं स्वयम्भु प्रतछि यो नन्द जसोदा यही मुख चूमैं ।
याहि के पांयनते भइ पावन यों सुख पुंज सबै व्रज भूमैं ।।
याहि विरंचि निहारिबेकों शिव योगी को रूप ह्वै वारनें घूमैं ।
ऐसो सरूप न देख्यो कहुं या दुनींया कहा तिहुं लोकनहुं मैं ।।२५।।

कवित्त—

जन्म जन्म मोहिं मिलै या उपासनाहीं,
ईश्वर समर्थ मेरे शिर पें धनी रहैं ।
मोहिं मिलै निम्बारक घर में जनम सदा,
मेरे सुख पुंज कहैं लगनि घनी रहै ।।
भूलों तोहिं कबहूंन तुहुं मोहिं भूलै,
मति हितगति चित वृत्ति तोहि में सनी रहै ।
यही वीनती है सरवेश्वर तुम्हारे,
चरनारविन्द मांहि मेरी भक्ति बनी रहै ।।२६
धरियो हिये में ध्यान इष्टदेव आपने को
पढ़ि पढ़ि पातक कलेवर के हरियो ।
अरियो न कबहूं विषाद भरे लोगन सों,
काम क्रोध लोभ मोह पापिन सों डरियो ।।
तरियो भले ही भवसिन्धु को निश्शंक होय,
कहैं सुख पुंज या उपासना पकरियो ।
निम्बारकसम्प्रदाय के सन्त महन्त सरवेश्वर,
पञ्चीसी के कवित्त कण्ठ करियो ।।२७।।

।। इति श्रीसुखपंज कवि विरचित सर्वेश्वर पञ्चीसी सम्पूर्ण ।।

❋ अथ श्रीसर्वेश्वराष्टकम् ❋

छन्द झूलना—

निज मूरति सोहनी सूरति जो,
मम मन सों नांहि टरै टारी ।
यह जोतिर्ब्रह्म सदैव सनातन,
रूप सुदर्शन छवि भारी ।।
निशि द्योस रटैं सनकादिक लौं,
धरि ध्यान लगाय हिये तारी ।
सुख पुञ्ज कहै मम ईष्ट देव,
श्रीसर्वेश्वर की बलिहारी ।।१।।

यह कच्छ मच्छ वाराह नर हरी,
परशुराम परशा धारी ।
यह राम कृष्ण वामन अरु बुद्ध,
व कल्कि रूप दश अवतारी ।।
यह हयग्रीव चौबीस रूप धरि,
कलि कलमष जिहिं छिन टारी ।
सुख पुञ्ज कहैं मम ईष्ट देव,
श्रीसर्वेश्वर की बलिहारी ।।२।।

कबहूँकि मुकुट कर लकुट चटक पट,
फेंट वन्धी कामरि कारी ।
मकराकृत कुण्डल कंठ शिरी,
बनमाल विशाल हिये धारी ।।
मुरली सुर लीन प्रवीन बाल ढिग,
बात कहैं हँसि दै तारी ।

सुख पुञ्ज कहैं मम ईष्ट देव,
श्रीसर्वेश्वर की वलिहारी ।।३।।

कबहूँ दधि चौरत जाय निहोरत,
घर घर डोलत सौ वारी ।
कबहूँ बनि बालक लोटत पालक,
करि करि नूपुर झुनकारी ।।
कबहूं कि त्रिभंगी बनि बहुरंगी,
प्रीति इकंगी विस्तारी ।
सुख पुञ्ज कहैं मम ईष्ट देव,
श्रीसर्वेश्वर की बलिहारी ।।४।।

यह अगम अपार पार नहिं आवत,
सकल सृष्टि जिहिं विस्तारी ।
यह ब्रह्म सनातन हाथ न आतन,
ताहि रटत सब नर नारी ।।
यह सिन्धु मन्थन करि प्रकट रतन वर,
सब देवन करि बँटवारी ।
सुख पुञ्ज कहैं मम ईष्ट देव,
श्रीसर्वेश्वर की बलिहारी ।।५।।
कबहूँ कि चरावत धेनु गोप संग,
दान लेत झगरत भारी ।
छलवल करि करि असुर न हरि हरि,
कबहूँ बनि बैठत गिरिधारी ।।
वहु रूप धरें नहिं जानि परें,
व्रजवालनि में बन व्यभिचारी ।

सुख पुञ्ज कहैं मम ईष्ट देव,
श्रीसर्वेश्वर की बलिहारी ।।६।।
नारद मुनि गावत हरषि रिझावत,
ध्यान लगावत दृढ़कारी ।
इन्द्रादिक आवत शीश नवावत,
निरखि सिहावत छवि भारी ।।
करतार कहावत सृष्टि उपावत,
असुर खपावत करि रारी ।
सुख पुञ्ज कहैं मम ईष्ट देव,
श्रीसर्वेश्वर की बलिहारी ।।७।।

जग पतित उधारन तारत वारत,
टारत दारुन दुख भारी ।
मन वांछित कारन जिहिं छिन सारन,
करि उपकारनु जस धारी ।।
मम हिय विच धारण नाम उचारन,
जन्म सुधारन सुख कारी ।
सुख पुञ्ज कहैं मम ईष्ट देव,
श्रीसर्वेश्वर की बलिहारी ।।८।।

इति श्रीसुखपुञ्ज कविवर विरचित श्रीसर्वेश्वराष्टक सम्पूर्णम् ।

।। इष्ट प्रतिज्ञा ।।

छन्द त्रिभंगी—

वपु धरेउ सुदरशन अद्भुत दर्शन करत अकरषन वसि जन उर,
जिहिं रटत संकरषन हरषि हरषि मन डरत असुर जमपुर दुर ।

सनकादिक ध्यावत पार न पावत नारद गावत नित पद धुर,
देवन मन भावत ब्रह्म कहावत शीश नवावत सुरपुर गुर ।।
जग पतित उधारन अगम अपारन हरि भुव भारन जन परि ढुर,
कलि कल्मष टारन हम हिय धारन नाम उचारन करि मन फुर ।
दृढ़ मन पन धारे सुजस उचारे तुरत उबारे दिये सुरपुर,
त्रिभुवन दुख टारे मम रखवारे इष्ट हमारे सरवेसुर ।।१।।

अथ कलि सन्तारण मन्त्र

कवित्त—

यही मन्त्र देत सुख पुञ्ज उच्च पद क्योंकि,
कैयो कोरि हाथ जोरि रहत खरे खरे ।
याहि मन्त्र कैं प्रभाव भये महानुभाव,
मन्त्र याहि ते सुनें कि भव सागर तरे तरे ।।
यही महामन्त्र याहि जपिवो सदैव,
याते कलुष कलेवर के रहत परे परे ।
हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।।१।।
दोहा—लकरी धोवैं भेष नें, करैं सविधि सौं पाक ।
जा कारन षट्पट करैं, ताकों भावै छाक ।।

अथ अपरस पञ्चक

कवित्त—

हम करें आभरन अपरस स्वयं पाक,
मति कोउ छूवै याहि राखें सक डरकी ।
जाके लिये करें सो लिढाक भयो ऐसे फिरै,
ध्यावें ताहि तक लों अहीरन की लरकी ।।

खाय लिये जिन भीलनी के झूँठे बेरनि लौं,
सोही इष्ट पुंज भयो रहे वितरकी।
जाकी हमें जूँठनि सदैव खान परै सु तो,
खात फिरै छाक व्रजवासिन के घर की ।।१।।

जाके लिये अपरस स्वयं पाक करें हम,
ताहि कोउ छूवै तो उतारि डारैं वर-वर।
कैसे हू करैं यो तो फिरै भावना को भूखो,
क्योंकि गोपिन की छाक कोहू झपटि खात लरि-लरि।।
हम यों करैं तो लोग विकल बतावें हमैं,
सुख पुंज सेवना दिया की करैं डर-डर।
खाँथ जाकी जूँठनि हमारो इष्ट यही जासों,
लेहु महाराज कहैं वह खात फिरै घर-घर।।२।।

हम अपरस ह्वै अनुक्रम सों करें पाक,
कैयो हू रसोई छूय गये तें उतारी में।
याके लिये राखें डर कैयो बात बातन के,
मति कहूं परै चूक भक्ती हमारी में।
योतो खाय करमा की खिचरी विदुर साक,
व्यापक है सुख पुञ्ज सब नर नारी में।
चाहो सुही जात हाय यो तो भूखो भाव को,
परोसिकें बुलावै जाकै जेंवैं जाय थारी में ।।३।।

छैला है छली है महावली है महीपति है,
जीव जन्तु सब पशु पंक्ति लौं सम्हारो है।
मित्र है विचित्र है अनित्र है न ऐसो,
रूप देखि कें ब्रजांगनानि आवत तिवारो है।।
वांको है त्रिभंगी है स्वयम्भू है सनातन तें,
लिये सुख पुंज नाम सफल जमारो है।

चोर है लवार है रु लंपट चटोकरा है,
टेढ़ी टाँग वारो इष्ट दैवता हमारो है ।।४।।
नन्दजू के बछरा चरात फिरै ग्वाल जाको,
ध्यान धरैं शिव लों बिछाय मृगछाला को ।
और सुख पुंज गुन अवगुन अनेक भरे,
कूदिके कलिंदी नाँथि ल्यायो नाग कालाको ।।
द्वै ही ऐव बड़े तिन्हें कोई हून बांधै गांठि,
परे जाय जामें जपैं जाको हम माला को ।
चोरयो नव-नीत ब्रज योषितान लिये फिरयो,
सेवें हम चोर जार शिरोमनि लाला को ।।५।।

बन्ध विमोचन–

षटपदी—

कुरु हि कृपां करुणार्णव ! माधव ! भक्तजनोपरि हे कंशान्तक !
दाशरथे ! दामोदर ! केशव ! अच्युत ! भवभंजन ! दुष्टान्तक !
वामन ! वासुदेव ! नारायण ! रावणादिदनु दैत्यकुलान्तक !
हृषीकेश ! गोपीजनवल्लभ ! राधारमण ! कृष्ण ! दुरितान्तक !
सर्वेश्वर ! गोवर्द्धन गिरिधर ! गोपीश्वर ! हे कृष्ण ! अघान्तक !
पाहि पाहि जनसंसृति नाशक ! विना त्वां नहि कोऽपि भवान्तक !

सवैया—

काम को तार रहो भवदंघ्रि, पराग के सेवन में नित ही नित ।
चक्षु स्वरूप निरीक्षण में श्रवणेऽपि कथाश्रवणे मनने चित ।।
काल कराल भयादधिकं त्रसितोऽस्मि दयां कुरु मर्दय कुंतोडित ।
करुणा वरुणालय ! हेसर्वेश्वर ! तोहू को होय क्यों मैं भव-पीडित ।।

इति श्रीबन्धविमोचन सर्वेश्वर स्तोत्रम् ।

—००:०:००—

अनन्त श्रीविभूषित श्रीमज्जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्री "श्रीजी" श्रीसर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराजकृत—

श्रीगोपीजनवल्लभाष्टकस्तोत्रम्

नवाम्बुदानीकमनोहराय प्रफुल्लराजीवविलोचनाय ।
वेणुस्वनाऽऽमोदित गोकुलाय नमोस्तु गोपीजनवल्लभाय ।।१।।

किरीट - केयूरविभूषिताय ग्रैवेयमालामणिरंजिताय ।
स्फुरल्लसत्काञ्चनकुण्डलाय नमोऽस्तु गोपीजनवल्लभाय ।।२।।

दिव्याङ्गनावृन्दनिषेविताय स्मितप्रभाचारुमुखाम्बुजाय ।
त्रैलोक्यसंमोहनसुन्दराय नमोऽस्तु गोपीजनवल्लभाय ।।३।।

रत्नाद्रिमूलालयसंगताय कल्पद्रुम - छायकृतासनाय ।
हेमस्फुरन्मण्डपमध्यगाय नमोऽस्तु गोपीजनवल्लभाय ।।४।।

श्रीवत्सरोमावलिरंजिताय वक्षस्थले कौस्तुभभासिताय ।
सरोजकिंजल्कनिभांशुकाय नमोऽस्तु गोपीजनवल्लभाय ।।५।।

दिव्यांगुलीयांगुलिरंजिताय मायूरपिच्छच्छविशोभिताय ।
दिव्यांम्बरालंकृतविग्रहाय नमोऽस्तु गोपीजनवल्लभाय ।।६।।

मुनीन्द्रवृन्दैर्विधिसंस्तुताय रक्षोगणाद्गोकुलरक्षकाय ।
धर्मार्थकामामृतसाधनाय नमोऽस्तु गोपीजनवल्लभाय ।।७।।

मनस्तमस्तोमदिवाकराय भक्तेष्टचिन्तामणिसन्निभाय ।
अशेषदुर्नामजभेषजाय नमोऽस्तु गोपीजनवल्लभाय ।।८।।

इति श्रीमन्निम्बार्कपादाब्जभृङ्ग-तत्पीठाधिरूढश्रीसर्वेश्वरशरण-
देवाचार्यकृत-श्रीगोपीजनवल्लभाष्टकं स्तोत्रम् ।।

अनन्त श्रीविभूषित श्रीमज्जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्री "श्रीजी" श्रीनिम्बार्कशरणदेवाचार्यजी महाराज कृत—

श्रीसर्वेश्वरप्रपत्तिस्तोत्रम्

कृष्णं सर्वेश्वरं देवमस्माकं कुलदैवतम् ।
मनसा शिरसा वाचा प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥१॥

कारुण्यसिन्धुं स्वजनैकवन्धुं कैशोरवेषं कमनीयकेशम् ।
कालिन्दिकूले कृतरासगोष्ठिं सर्वेश्वरं तं शरणं प्रपद्ये ॥२॥

वेदैकगम्यं भुवनैकरम्यं विश्वस्य जन्मस्थितिभंगहेतुम् ।
सर्वाधिवासं न परप्रकाशं सर्वेश्वरं तं शरणं प्रपद्ये ॥३॥

राधाकलत्रं मनसापरत्रं हेयास्पृशं दिव्यगुणैकभूमिम् ।
पद्माकरालालितपादपद्मं सर्वेश्वरं तं शरणं प्रपद्ये ॥४॥

आभीरदारानयनाब्जकोषैः संर्चितास्यं निखिलैरुपास्यम् ।
गोगोपगोपीभिरलंकृतांघ्रिं सर्वेश्वरं तं शरणं प्रपद्ये ॥५॥

गोपालबालं सुरराजपालं रामाङ्कमालं शतपत्रमालम् ।
वाद्यरसालं विरजं विशालं सर्वेश्वरं तं शरणं प्रपद्ये ॥६॥

आनन्दसारं हृतभूमिभारं कंशान्तकारं ह्यपिनिर्विकारम् ।
कन्दर्पदर्पापहरावतारं सर्वेश्वरं तं शरणं प्रपद्ये ॥७॥

विश्वात्मकं विश्वजनाभिरामं ब्रह्मेन्द्ररुद्रैर्मनसा दुरापम् ।
भिन्नं ह्यभिन्नं जगतोहि यस्मात् सर्वेश्वरं तं शरणं प्रपद्ये ॥८॥

पीतांशुकं चारुविचित्रवेशं स्निग्धालकं कञ्जविशालनेत्रम् ।
गोरोचनालं कृतभालनेत्रं सर्वेश्वरं तं शरणं प्रपद्ये ॥९॥

वन्यैर्विचित्रैः कृतमौलिभूषणं मुक्ताफलाढ्यं झषराजकुण्डलम्।
हेमांगदं हारकिरीटकौस्तुभं मेघाभमानन्दमयं मनोहरम् ॥१०॥

सर्वेश्वरं सकललोकललाममाद्यं देवं वरेण्यमनिशं स्वगतैर्दुरापम्।
वृन्दावनान्तर्गतैर्मृगपक्षिभृंगै-रीक्षापथागतमहं शरणं प्रपद्ये ॥११॥

हे सर्वज्ञ ! ऋतज्ञ ! सर्वशरण ! स्वानन्यरक्षापर ! ।
कारुण्याकर ! वीर ! आदिपुरुष ! श्रीकृष्ण ! गोपीपते ! ॥
आर्तत्राण ! कृतज्ञ ! गोकुलपते ! नागेन्द्रपाशान्तक ! ।
दीनोद्धारक ! प्राणनाथ ! पतितं मां पाहि सर्वेश्वर ! ॥२॥

हे नारायण ! नारसिंह ! नर ! हे लीलापते ! भूपते ! ।
पूर्णाचिन्त्यविचित्रशक्तिकविभो ! श्रीश ! क्षमासागर ! ॥
आनन्दामृतवारिधे ! वरद ! हे वात्सल्यरत्नाकर ! ।
त्वामाश्रित्य न कोऽपि याति जठरं तन्मां भवात्तारय ॥१३॥

माता पिता गुरुरपीश ! हितोपदेष्टा
विद्याधनं स्वजनवन्धुरसुप्रियो मे ।
धाता सखा पतिरशेषगतिस्त्वमेव
नान्यं स्मरामि तवपादसरोरुहाद्वै ॥१४॥

अहो दयालो ! स्वदयावशेन वै प्रपश्य मां प्रापय पादसेवने।
यथा पुनर्मे विषयेषु माधव ! रतिर्न भूयाद्धि तथैव साधय ॥१५॥

श्रीमत्सर्वेश्वरस्यैतत्स्तोत्रं पापप्रणाशनम् ।
एतेन तुष्यतां श्रीमद्राधिकाप्राणवल्लभः ॥१६॥

इति श्रीमन्निम्बार्कपादपीठाधिरूढश्रीनिम्बार्कशरणदेवाचार्य-
विरचित—श्रीसर्वेश्वरप्रपत्तिस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

अनन्त श्रीविभूषित श्रीमज्जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्री "श्रीजी" श्रीनिम्बार्कशरणदेवाचार्यजी महाराज कृत—

नवरत्नयमुनाष्टकस्तोत्रम्

कदाचित्ते तीरे जननि जननी वाक्यममृतम्
गृहीत्वा शुद्धत्वं ध्रुवपदमगान्मातृसहितः ।
महिम्नः श्रुत्वा ते प्रचुरतरवित्ति ध्रुवजनः ।
तपस्तप्त्वा सद्यः शरणमिति यातस्तवतटम् ।।१।।

कदाचित्ते देव्याः सकलजनुरुत्तारणपयः ।
विहारस्थाने वै प्रकटिततरंगैः पटुतरम् ।।
सदा स्वस्थैर्देवैः सरलहृदयैः सेविततमम् ।
वयं पीत्वा कुर्म्मः प्रचुरकलुषं सम्प्रति हतम् ।।२।।

कदाचिन्मे भाग्यात्तव तरणितीरे भवहरे ! ।
महद्वृन्दाटव्यां किमपि जननं मे भवतु वा ।।
गवां रम्ये स्थाने परिरटनपाटीहरहरे ! ।
भविष्यत्येषां वै जननिजनुषोर्भूरिमहिमा ।।३।।

कदाचिन्मे चित्तं हरिचरणसेवां प्रसरतु ।
भवद्वात्सल्याद्वै सुरमनुजभक्तैः परिचितां ।।
सदा ते वेलायां भव कमलपुष्पैः परिहृता ।
इयं मे वाञ्छा स्यात्तव तट सुसेवा भवतु तवा ।।४।।

कदाचिन्मे मातर्मदुपरि कृपा ते सुकृतजा ।
भविष्यत्येषा वै तव जलतरंगोऽभ्रुलितिभीः ।।

हरेः सान्द्रं रूपं मदततिघनश्याममलम्
अहं द्रक्ष्ये सौम्यं सखिजनपरीतं तव तटे ॥५॥

कदाचिन्मार्तण्डी विषयरसखण्डी कलुषजा
प्रचण्डी स्वावेगैर्जगदघविखण्डी स्वयशसा ॥
शिवा शान्ता नित्यं तरलसरलैः शोभिततराम्
ममाभीष्टं देयाद्व्रजजनसुसेवां तव तटे ॥६॥

कदाचित्कालिन्दी मुनिवरवरैः सेविततटी
हरे ! विष्णो ! राधे ! सुरटनपरैः कूजितकुटी ॥
प्रवाहे किं शब्दैः प्रियरमणकान्तं परिरटी
किमन्यद्याञ्चाभिः प्रभवतु सदा मे भववटी ॥७॥

कदाचिच्छ्रीकृष्णे दृढतमकृतान् पापनिचयान्
कुरुत्वं दृष्टिं मां तव महिमनित्वं भव दृढा ॥
कदा भ्रातुर्लोकं बहुतरहठो मे प्लुतजला
अतो मे मायां तां हरतु जननि प्रार्थनमिदम् ॥८॥

नवरत्नमिदं पुण्यं प्रातः सायं पठेन्नरः
हरिस्तस्मै प्रसन्नो वै ददाति फलमीप्सितम् ॥९॥

नवरत्नात्परं किञ्चिन्नान्यदस्ति महीतले
सर्ववेदेतिहासानां सारं ह्यस्मिन्नुदाहृतम् ॥१०॥

इति श्रीमन्निम्बार्कपट्टाधिरूढश्रीसर्वेश्वरशरणदेवाचार्यचरण-
चञ्चरीक-श्रीमन्निम्बार्कशरणदेवाचार्यविरचितनवरत्न-
श्रीयमुनाष्टकस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

अनन्त श्रीविभूषित श्रीमज्जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्री "श्रीजी" श्रीव्रजराजशरणदेवाचार्यजी महाराज कृत—

श्रीसर्वेश्वरप्रणतिपद्यावली

श्रीमच्छालं पीतफालं सुमालं तेजोजालं दीप्तभालं सतालम् ।
गोत्रापालं कंसकालं सुचालं गोपीलालं नन्दबालं नमामि ।।१।।

सुखसागरनागरनन्दसुतं सुरयोगिमनोऽम्बुजमध्यगतम् ।
श्रुतिसंघदुरूहगुणौघयुतं प्रणमामि यशोमतिसंगगतम् ।।२।।

गणनाथमुखैरविगण्यगुणं गुणकल्पितमात्रवपुर्ग्रहणम् ।
हृतसेवकसंचितपापगणं प्रणमामि पवित्रगुणश्रवणम् ।।३।।

ज्वरिताघृणादारुणचित्तजनुर्व्रजगोपवधूजनवेद्यतनुम् ।
तनुनिर्जितकोटिविहीनतनुं ननु नौमि मुदाजलदाभतनुम् ।।४।।

मणिनूपुरशोभितपादयुगं वलयांकितसुन्दरपाणियुगम् ।
मणिराजिविराजितबाहुयुगं प्रणमामि नटाकृतिनेत्रयुगम् ।।५।।

व्रजयोषिदनंगसुखाब्धिविधुं विधुकोटिसमप्रभवक्त्रविधुम् ।
विधुशेखरहृत्कुमुदस्य विधुं प्रणमामि किशोरविमुग्धविधुम् ।।६।।

श्रितगोपकदम्बकदम्बतलं ललितामलकाननपुष्पगलम् ।
चलकुण्डलरंजितकर्णतलं किल नौमि विहारकलाकुशलम् ।।७।।

शिखिपिच्छसुरंजितसन्मुकुटं कटिसंवृतसुन्दरपीतपटम् ।
स्फुटकान्तिघटं प्रणमामि नटं यमुनातटकुंजविहारविटम् ।।८।।

व्रजगोपवधूपरिधेयहरं यमुनाजलकेलिकलाचतुरम् ।
जनमोहनसुस्वरवेणुधरं प्रणमामि चिरं नवनीतहरम् ।।९।।

वृषभानुसुताऽन्वितवामतनुं तनुनिर्जितनूतननीरधरम् ।
परमोत्कटपापविनाशकरं प्रणमामि मनोहरवेषधरम् ।।१०।।

फणिराजफणोपरिनृत्यकरं गरलोदमहानलतापहरम् ।
शकटादिनिशाचरनाशकरं प्रणमामि कराग्रगिरीन्द्रधरम् ।।११।।

वनिताननचुम्बनदानमनः स्मितशंसितगोपवधूवदनः ।
चलचैलतडिद्द्युतिनीलघनः हृदि मे बसतान्मुरलीवदनः ।।१२।।

जगदुद्भवपालननाशकरं करुणाब्धिगुणत्रयरूपधरम् ।
भजनप्रियसाधुजनैकगतिं प्रणमामि मदीयमनोवसतिम् ।।१३।।

धृतवंशिनुता बनमालिसता व्रजराज सराधहरिं भजता ।
नतिपद्यसुमौक्तिकपंक्तिरियं रचिताव्रजराजमुदेभवतात् ।।१४।।

इति श्रीमन्निम्बार्कपीठाधिरूढ़ श्री "श्रीजी" श्रीव्रजराजशरणदेवाचार्य–विरचित श्रीसर्वेश्वर प्रणतिपद्यावली समाप्ता ।

अनन्त श्रीविभूषित श्रीमज्जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज कृत—

श्रीराधाकृष्णाष्टक-स्तोत्रम्

वृन्दारण्ये सदा कुञ्जे यमुनापुलिने प्रिये ।
राधाकृष्णं सखीसेव्यं विहरन्तं नमाम्यहम् ॥१॥

कदम्बमञ्जुकुञ्जेषु सखीड्यं श्रीप्रियाप्रियम् ।
कोकिलाकूजितेष्वर्च्यं नमामि नितरां हरिम् ॥२॥

वेणुसुवादने दक्षं कृष्णं राधाप्रियायुतम् ।
सौन्दर्यसारसर्वस्वं नौमि कारुण्यसागरम् ॥३॥

कदम्बमालया रम्यं राधासर्वेश्वरं प्रभुम् ।
पीतकौशेयशोभाढ्यं प्रणमामि सखीश्वरम् ॥४॥

श्रीधामविपिने कुञ्जे निकुञ्जे नित्यशोभितम् ।
राधाकृष्णं रसाधारं वन्दे वंशीविभूषितम् ॥५॥

लावण्यसमधिष्ठानं विधीशेन्द्रादिवन्दितम् ।
रसिकैः सततं सेव्यं राधाकृष्णं भजेऽनिशम् ॥६॥

निम्बार्कहृदयाराध्यं कृपाधाम दयार्णवम् ।
प्रपन्नतापहर्त्तारं वन्दे श्रीरासशेखरम् ॥७॥

वरेण्यं प्रत्यहं प्रात-र्युगलं राधिकाप्रियम् ।
स्वस्थेन मनसा नित्यं स्मरामि विश्वकारणम् ॥८॥

राधाकृष्णाष्टकं स्तोत्रं युग्मभक्तिप्रदायकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥९॥

इति श्रीमन्निम्बार्कपादपीठाधिरूढ श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज विरचित श्रीराधाकृष्णाष्टक स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

✽ श्रीसर्वेश्वरो जयति ✽

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ द्वारा सञ्चालित

पारमार्थिक संस्थाएँ

१. 'श्रीसर्वेश्वर' मासिक पत्र एवं सर्वेश्वर-मुद्रणालय
२. 'श्रीनिम्बार्क' पाक्षिक पत्र एवं निम्बार्क-मुद्रणालय
३. श्रीनिम्बार्क ग्रन्थमाला
४. श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय
५. श्रीनिम्बार्क दर्शन विद्यालय
६. श्रीसर्वेश्वर वेद विद्यालय
७. श्रीराधासर्वेश्वर छात्रावास
८. श्रीराधामाधव गोशाला
९. श्रीहरिव्यास पारमार्थिक औषधालय
१०. श्रीनिम्बार्क पुस्तकालय
११. श्रीहंस वाचनालय
१२. सन्त सेवा
१३. श्रीराधामाधव स्थायी सेवानिधि
१४. श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय स्थायी सेवानिधि

उपर्युक्त पारमार्थिक संस्थाओं की प्रगति में आप भी अपनी आर्थिक सेवाएँ समर्पित कर सहयोग प्रदान कीजिये ।

—व्यवस्थापक

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) की—

असाधारण विशेषतायें।

१. भारतवर्ष के समस्त तीर्थों का पूज्य गुरुस्वरूप पुष्कर-क्षेत्र के अन्तर्गत यह पीठ है।

२. अनादि वैदिक श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय में सर्वपूज्य यह एक ही आचार्यपीठ है।

३. श्रीसनकादिकों के सेव्य "श्रीसर्वेश्वर भगवान्" अधिकतर यहाँ पर ही विराजते हैं, संसार में इतना प्राचीन गुञ्जाफलसम सूक्ष्म शालग्राम विग्रहस्वरूप न कहीं पर किसी ने देखा ही है और न सुना ही है।

४. संस्कृत के अद्वितीय रससिद्धकवि रसिकभक्त श्रीजयदेवजी के आराध्य ठाकुर श्रीराधामाधव भगवान् यहाँ पर ही विराजते हैं, जिनको कि गुजरात के पुराने भक्त जूना श्रीनाथजी कहते हैं, वास्तव में उनका कहना उचित ही है, क्योंकि जिसने एक बार श्रीराधामाधव प्रभु के दर्शन कर लिए वह यही कहेगा कि—
"जिन आंखिन में यह रूप बस्यो, उन आंखिन सों अब देखिये का।"
वास्तव में ऐसी अद्‌भुत मनोहर चमत्कारी भगवत्-प्रतिमा और कहीं नहीं देखी जाती।

५. श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज के हवन करने का अग्निकुण्ड और नालाजी यहाँ ही हैं जिनकी पवित्र भस्म और पानी से सभी मनोरथ सिद्ध होते हैं। जयपुर के महाराजा जयसिंहजी इन्हीं दोनों वस्तुओं की आराधना से उत्पन्न हुए थे।

६. संस्कृत साहित्य के प्राचीन ग्रन्थों का संग्रह और वृक्ष-लताओं से सुशोभित निम्बार्कतीर्थ सरोवर यहाँ दर्शनीय है।

६. यहां के जल-वायु ऐसे उत्तम हैं कि बिना ही औषधि सेवन किये भी बहुत से असाध्य रोगों को मिटा देते हैं।

---

* श्रीनिम्बार्क-मुद्रणालय, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) *